बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-66 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

बच्चों की तस्करी पर नहीं है लगाम

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकारों ने दिल्ली की कुछ विशेष जगहों पर जाकर यह जानने के लिए छानबीन की कि वर्तमान में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दशा क्या है? पता चला कि लगभग 20-25 बच्चों को बिहार यू.पी., उत्तराखंड, नेपाल तथा राजस्थान से दिल्ली लाया गया है। इन बच्चों को अलग-अलग प्रकार के खतरनाक कामों में लगाया जा रहा है। आईए विस्तार से जानते हैं कि कैसे इन बच्चों को मोहरा बनाकर राजधानी दिल्ली जैसे शहरों में लाया गया है?

पत्रकार इस विषय को लेकर उन जगहों पर जा पंहुचे जहां पर अधिकतर बच्चे काम में लिप्त पाए जाते हैं; जैसे लालबत्ती, रेलगाड़ी, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा व भीड़-भाड़ वाली जगहों आदि पर। इन स्थानों पर जाकर पत्रकार काफी बच्चों से मिला जिनमें से कुछ भीख मांगते पाए गए। कुछ रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनते हुए व बस अडड्ों पर पब्लिक की जेब काटते हुए। जब पत्रकार ने इन बच्चों से बात करनी चाही तो यह पत्रकार को देखकर भागने लगे। काफी मुश्किल से इन बच्चों ने पत्रकार की बात सुनी। पत्रकार ने पहले अपने बारे में जानकारी दी, फिर इन बच्चों के साथ अपनी संवेदनात्मक हमदर्दी दिखाते हुए इन बच्चों से छुपा सच जानने की कोशिश की। लेकिन यह बच्चे अपने बारे में जानकारी देने के लिए तैयार नहीं थे। लगभग दो से तीन घंटे तक इन बच्चों के साथ मित्रवत चर्चा-विचार करने के बाद बच्चों ने अपने बारे में जानकारी दी। ये बच्चे डरे और सहमे हुए थे, क्योंकि इन बच्चों के जो मालिक हैं वे बहुत दुष्ट हैं। अगर ये बच्चे किसी अनजान व्यक्ति से बात करते हुए दिख जाते हैं तो इनके मालिक इन बच्चों पर अत्याचार करते हैं। पत्रकार ने बच्चों से बातों-बात

में पूछा कि आप बच्चे कहां से आए हो और यह काम क्यों कर रहे हो? 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया कि मैं बिहार के बरौनी जिला का रहने वाला हूं। हम बच्चे भूतकाल में अपने गांव में पढ़ाई-लिखाई करते थे लेकिन हमारा मालिक हमारे माता-पिता को पैसे और शिक्षा का लालच दिया कि मैं तुम्हारे बच्चे को शहर ले जाकर पढ़ाई-लिखाई करवाऊंगा और साथ ही साथ प्रतिमाह तीन हजार रुपए भी दूंगा। इसी लालच में फं स कर हमारे माता-पिता इन दुष्ट व्यक्तियों के साथ भेज दिए; लेकिन हमारे माता-पिता भी क्या करते। उन्हें भी बहुत मुश्किल से घर का खर्चा निकालना पड़ता है। दुख की बात यह है कि ये लोग हमारे माता-पिता को जिस तरह बोलकर हमें लेकर आए थे कि हम तुम्हारे बच्चों को स्कूल में पढ़ाई करने भिजवाऊंगा; ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। उल्टे हमारा मालिक हम बच्चों से जबरन काम करवाने लगे हैं। अगर हम बच्चे काम करने से मना करते हैं, तो हमारे मालिक अपने साथ रखने से इंकार कर देते हैं। हम इनके पास से भागने की कोशिश करते हैं, तो हम बच्चों को उन दो बच्चों की याद आ जाती है जिन्होंने यहां से भागने की कोशिश की थी, उनके पकड़े जाने पर उन्हें तमाम तरह से प्रताड़ित किया गया था, डराया-धमकाया गया था। यह बात लगभग एक साल पहले की है। वे दोनों बच्चे भी इसी व्यक्ति के चंगुल में फंसे हुये थे। दोनों बच्चे इस मालिक के दुर्व्यवहार की वजह से मौका पाकर भाग गये, तो उन दोनों बच्चों पर चोरी का इल्जाम लगा दिया गया और उन बच्चों के घर तक पहुंच गये। उनके सीधे-साधे माता-पिता से झूठ बोला कि तुम्हारे बेटे ने मेरे घर में चोरी की है इसी डर से यह भागकर आ गया है। अब तुम्हें इसका हजार्ना भरना पड़ेगा, नहीं तो मुझे मजबूरन पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करानी पड़ेगी। इसके लिए तुमको जेल भी जाना पड़ सकता है। जेल जाने के डर से डरे-सहमे मेरे माता-पिता ने अपनी जमीन गिरवीं रख कर उस व्यक्ति को हजार्ना दिया। इसलिए हम बच्चे इसके पास से भागने की कोशिश भी नहीं करते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को गांव से लाने के बाद कहां पर रखते हैं? 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) ताहिर ने बताया कि भईया हम बच्चों को यह लोग एक जगह पर नहीं रखते हैं। इनको जिस स्थान पर कमाई का जारिया दिखाई देता है, यह उसी स्थान पर हम बच्चों को रखते हैं और दूसरी बात यह है कि इन पर किसी का शक न हो, इसलिए यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलते रहते हैं और हमारे माता पिता को पैसे भेजते हैं या नहीं हम बच्चों को कुछ पता नहीं है और हम अपने माता-पिता से फोन पर बात भी करना चाहते हैं, तो हमारे मालिक नहीं करने देते हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

रस्सी पर खेल दिखाकर जिंदगी गुजार रहे हैं मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर नेहा व रिपोर्टर पूनम

जिनको आप बंजारों के नाम से जानते हैं इन बंजारों का रहने का कोई ठिकाना नहीं होता। यह खाली जगह को अपनी कमाई का जरिया बना लेते हैं। अपना तम्बू गाड़कर रहने लगते हैं। शायद इस बारे में कोई-कोई जानता होगा कि बंजारों में एक विशेष नियम भी होता है; वह नियम है कि वे अपने बच्चों को शिक्षा से वंचित रखते हैं; क्योंकि उनके बच्चे घर जैसे ही जन्म लेते हैं, उसी समय से उन्हें पढ़ाई-लिखाई की बात करने के बजाए इनके माता पिता अपनी कमाई का जरिया इन मासूम बच्चों को बनाते हैं और जैसे ही बच्चा तीन-चार साल का होता है, उन बच्चों को खेल की ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है; ताकि इन छोटे मासूम बच्चों को जानकारी मिल जाए कि किस प्रकार से लोगों के सामने अपने खेलों को प्रकाशित करना है। 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) समीर ने बताया कि जब मेरे माता पिता खेल की ट्रेनिंग के लिए भेजते थे तो खेल सीखने के दौरान मुझे बहुत तकलीफ होती थी; क्योंकि हमारे जो खेल सिखाने वाले अध्यापक थे वह हम जैसे छोटे बच्चों को रस्सी के ऊपर चलना सिखाते थे। लेकिन इन पतली रसियों के ऊपर चलने में मुझे बहुत डर लगता था। कई बार तो मैं डर के मारे बेहोश भी हो गया। फिर भी हमारे अध्यापक जबरदस्ती रस्सी पर चलने के लिए

बोलते थे। अगर मैं उन्हे मना करता था तो मुझे मारने के लिए दौड़ते थे और हमारे माता पिता से भी शिकायत करते थे। अध्यापक की शिकायत की वजह से घर जाने के बाद हमारे माता-पिता हमें खाना भी नहीं देते थे और मारने-पीटने लगते थे। इसी डर से हम बच्चों ने काफी मेहनत की। वर्तमान में हम में से कुछ बच्चे ऐसे हैं जो खेल दिखाना सीख गए हैं। 11 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजू ने बताया कि जब मैं तीन साल का था तब मैंने खेल सीखना शूरू किया। आठ साल के बाद मैं पूरी तरह से खेल दिखाना सीख गया हूं और यह भी जान गया हूं कि लोगों के सामने कैसे खेल दिखाना है। वर्तमान में हम अपने माता-पिता के साथ अलग.अलग जगहों पर; जहां पर अधिकतर भीड़भाड़ होती है; जैसे- बाजार मेला व मंदिर। इन जगहों पर हम बच्चे खेल दिखाते हैं। खेल दिखाने का तरीका कुछ इस तरह है कि हमारे माता-पिता पहले बांस के खंबे गाड़ते हैं फिर उस पर रस्सी बांधते हैं, फिर मैं उस रस्सी पर खड़ा होता हूं। मेरे हाथ में एक बांस की बल्ली पकड़ा देते हैं जिससे मुझे दोनों तरफ का बैलेंस बनाना पड़ता है; ताकि मैं उस रस्सी पर से नीचे ना गिर जाऊँ; और मेरे माता-पिता नीचे बैठकर ढोलक बजाते रहते हैं, ताकि पब्लिक ज्यादा से ज्यादा इकट्ठी हो जाए। बच्चों ने बताया कि इस खेल में हमारी कमाई बहुत अच्छी हो जाती है, पर हमारे लिए यह एक बहुत बड़ा खतरा है। अगर खेल दिखाते वक्त रस्सी किसी भी वजह से टूट गई तो हमारे शरीर में बहुत बुरी तरह से चोट लगने का डर रहता है; और पब्लिक भी हमारा मजाक उडाती है और हमें एक रूपया भी देने के लिए तैयार नहीं होती। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अंजली ने बताया कि हमें भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाने का मन करता है लेकिन हमारे माता-पिता जब पढाई-लिखाई का नाम सुनते हैं, तो हम बच्चों को डांटने लगते हैं, कहते हैं कि हमारी जाति के बच्चे पढ़ाई-लिखाई करके भविष्य में कामयाबी हासिल नहीं कर सकते। स्कूल जाने के बाद वह बिगड़ जाते हैं, इसलिए बच्चों को पूरी जिंदगी अपने खेल के सहारे जीना पड़ता है।

आगरा में बढ़ते कदम और चाइल्ड लाइन के सदस्य 71 वां स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार !

बालकनामा का अंक 66 आपके हाथों में सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है। सभी बाल-रिपोर्टर परिश्रम कर रहे हैं। रिपोर्टिंग में विविधता आ रही है। बालकनामा का प्रसार सोशल मीडिया पर भी किया जा रहा है। देश की बड़ी घटनाओं का बालकों पर प्रभाव पड़ता है। किसी राज्य में नई सरकार आने पर स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं के समाधान की आशा जाग्रत होती है। स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाने का काम बालकनामा के माध्यम से स्वयं स्ट्रीट चिल्ड्रन कर रहे हैं, इसका सकारात्मक प्रभाव सरकारी मशीनरी पर पड़ता है और निर्णायक जगहों पर विचार विमर्श होता है।

सभी बाल साथियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ हम आशा करते हैं कि हम अपना बेहतर भविष्य बनाने में अवश्य कामयाब होंगे।

संपादकीय टीम

खुले में नहाती हुई लड़कियों को देखकर कुछ लोग करते हैं अश्लील हरकत

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने पुल के नीचे रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की, जिसमें ज्यादातर लड़कियों ने भाग लिया। उन्होंने अपनी परेशानी के बारे में बताते हुए कहा कि हमारा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए हम अपने परिवार के साथ बिहार के झाड़खंड जिले से दिल्ली में रहने के लिए आए हैं।

13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सिमरन ने कहा कि मेरा पूरा परिवार पुल के नीचे रहता है। हम अपने परिवार की गुजर-बसर करने के लिए भीख तथा कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। मुश्किल से हमारा गुजारा हो पाता है। मीटिंग में अपनी बात रखते हुए कहा कि हम सभी लोग इसी पुल के नीचे रहते हैं। यहीं खाना-पीना तंथा नहाना-धोना करते हैं।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने बताया कि जब हम लड़कियां इसी पुल के नीचे वस्त्र का

घेरा बनाकर नहाते हैं, तो इस पुल के नीचे से गुजरने वाले ऑटो तंथा रिक्शे वाले व कुछ पब्लिक हम लड़कियों को नहाते हुए गंदी नजर से देखते हैं और अपने ऑटो के अंदर हस्तमैथुन करते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कलपना ने बताया कि हम में से कुछ लड़कियां 18-19 साल की हो रही हैं। इन लड़कियों को देख कर लोग अश्लील बात बोलते हैं और जब हम रात को सो रहे होते हैं, तो कभी-कभी तेज हवा चलने की वजह से हमारे शरीर पर से वस्त्र हट जाते हैं तो यह लोग रात के समय भी अपनी गाड़ी के अंदर बैठकर हमें घूरते रहते हैं। इसी वजह से हम लड़कियों ने सोचा कि अब शौचालय में नहाने जाएंगे। लेकिन हमारे आस-पास कहीं दूर-दूर तक शौचलय नहीं है। हमारे आस-पास एक मेट्रो स्टेशन है। इस स्टेशन के अंदर शौचालय भी बना हुआ है लेकिन मेट्रो के कर्मचारी हम लड़कियों से बहुत ज्यादा ही पैसे मांगते हैं। जितने पैसे वह मांगते हैं उतने पैसे तो हमारे एक दिन का खर्चा है। इसी परेशानी को लेकर हमारे माता-पिता चिंतित रहते हैं कि कभी हमारे साथ कुछ गलत ना हो जाए। हम लड़कियां चाहते हैं कि हमारे पुल के नीचे एक शौचालय व्यवस्था की जाए ताकि हम लड़कियां इन गंदी नजरो से बच सके।

पिता की गलत सीख ने बनाया भट्टा मजदूर

रिपोर्टर पूनम

लगभग 25 बच्चे जिनकी उम्र 12 से 16 साल तक है वह अपने पिता के साथ दूसरे शहर की ओर जा रहे थे, तभी पत्रकार उन बच्चों के पास पंहुचा और इन बच्चों से बात करने लगा कि आप बच्चे कहां जा रहे हो? 13 वर्षीय परिवर्तित नाम अर्जुन ने बताया कि हम सभी बच्चे ईंट के भट्टे पर काम सीखने अजमेर व राजस्थान जा रहे हैं। पत्रकार यह बात सुनकर चैंक गया और पूछा कि आप बच्चे ईंट के भट्टे पर काम सीखने क्यों जा रहे हो? 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) संजय ने बताया कि हमारे माता-पिता इस काम के अलावा और कोई दूसरा काम नही सिखाते हैं। ईंट के भट्टे पर हमारे पिताजी ईंट बनाते हैं और हम बच्चे देखते हैं कि ईंट बनाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है? हमारे पिताजी कुदाल से मिट्टी खोदते हैं, फिर पानी डालते हैं और पानी डालकर दो तीन दिन के लिए छोड़ देते हैं; ताकि वह मिट्टी अच्छी तरह से गीली हो जाए। उसके बाद पिताजी पैरों से मिट्टी को खूंदते हैं, फिर हाथों से मिट्टी को मिलाते हैं, उसके बाद खांचे से ईंट बनाते हैं। हम बच्चे जब यह देख रहे होते हैं तो भट्टे का मालिक हमें खाली देखकर बहुत गुस्सा होता है। इसी डर से हम बच्चे

भी अपने पिताजी के साथ ईंट बनाने में हाथ बटाते हैं। वर्तमान में हम बच्चों को सिखाया जा रहा है कि पकी हुई ईंटों को भट्टे में से कैसे बाहर निकाला जाता है, भट्टी के अंदर जाने के लिए बोलते हैं। एक वस्त्र नाक व सिर में बाधने के लिए दिया जाता है ताकि हम बच्चे भट्टे में से निकलने वाले प्रदूषण से बच सकें। लेकिन इस वस्त्र से भी कुछ फायदा नहीं होता है। हमारे शरीर पर धूल मिट्टी पड़ने से हमारा शरीर लाल रंग का हो जाता है, अगर भट्टे के अंदर दो घन्टे लगातार काम करते हैं तो प्रदूषण के कारण दम घुटने लगता है; क्योंकि ईंट निकालते वक्त भट्टे में से बहुत धूल उड़ती है। धूल उड़ने की वजह से हमें आस-पास कुछ दिखाई नहीं देता है। परेशान होकर हम बच्चें इंट इधर-उधर फेंकने लगते हैं। इससे कुछ ईंटें टूट जाती हैं इसके बदले में हमारे पिताजी को मिलने वाली तनख्वाह में से कुछ पैसे भट्टे का मालिक काट लेता है। इसके बावजूद भी हमारे पिताजी यह काम सिखाना चाहते हैं। पिताजी को लगता है कि इस काम में बहुत पैसे हैं और एक अच्छा हुनर भी। अगर हम बच्चे ईंट बनाने का पूरा तरीका सीख गए तो हमारा भविष्य अच्छा बन जाएगा; क्योंकि इस दुनिया में सारे काम बंद हो सकते हैं लेकिन घर बनना कभी बंद नहीं हो सकता और लोगों को घर बनाने के लिए ईंट की बहुत ज्यादा जरूरत पड़ती है।

पैसा कमाने के लालच में बच्चे हो रहे शिक्षा से दूर

रिपोर्टर चेतन

दिल्ली सरकार ने आम पब्लिक की सुविधा के लिए बैट्री रिक्शा का निर्माण किया है। जब से बैट्री रिक्शा चलना शूरू हुआ है तब से रिक्शे वालों की कमाई दो गुनी हो गई है। पहले लोग नॉरमल रिक्शा चलाते थे। उनको नॉरमल रिक्शा चलाने में बहुत तकलीफ होती थी; क्योंकि रास्ते में ऊंची-नीची सड़कों का सामना करना पड़ता था। इस कारण उनके पैरों और पूरे शरीर में दर्द होता रहता था। इस रिक्शे को चलाने में पूरे शरीर की ताकत लगती थी। इस वजह से सरकार ने बैट्री रिक्शा का निर्माण किया। इससे लोगों को काफी राहत मिली। लेकिन कुछ लोगो ने इस काम को कमाई का जरिया बना लिया है और लोगों को लगने लगा है कि इस काम में बहुत अधिक कमाई है। इसी लालच के चलते वेस्ट दिल्ली में रहने वाले कुछ लोग पैसे कमाने के चक्कर में अपने ही बच्चों को इस काम में लगा रहे हैं। और तो और बच्चे स्कूलों से भी नाम कटवा रहे है। माता-पिता की ओर से इन बच्चों को भी बैट्री रिक्शा चलाने के लिए दिया गया है। अगर यह बच्चे बैट्री रिक्शा चलाने से इंकार करते हैं तो इनके माता-पिता अपने बच्चों पर दुर्व्यवहार करते हैं; जैसे कि खाना नहीं देना, मारपीट करना। इसी डर से बच्चे बैट्री रिक्शा चलाने लगे हैं। बच्चों ने अपने बारे मे जिक्र करते हुए कहा कि हम पहले स्कूल जाते थे तो हम बच्चों को लगता था कि हमारा भविष्य पढ़ाई करने से सुधर जाएगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। पत्रकार ने रिक्शा चलाने वाले बच्चों से पूछा कि आपके माता-पिता इस लालच में कैसे पड़े?

16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गुलशन ने बताया कि हमारे मोहल्ले में एक अंकल हैं जिनके 6 से 7 बैट्री रिक्शे हैं और उनके तीनों बच्चे भी बैट्री रिक्शा चलाने का काम करते हैं। जब इस अंकल को हमारे माता-पिता ने देखा तो उनसे पूछा कि आपके इतनी कमाई कैसे होती है? इस अंकल ने हमारे माता-पिता को बताया कि मेरे तीनों बच्चे बैट्री रिक्शा चलाते हैं और एक दिन में 12.13 सौ रुपए कमा कर लाते हैं। हमारे माता-पिता भी हम बच्चों को बैट्री रिक्शा किराए पर दिलाकर रिक्शा चलाने के लिए कहते हैं और हम बच्चे सुबह 6 बजे से लेकर रात ग्यारह बजे तक चलाते हैं। हम बच्चों को सड़क पर रिक्शा चलाने में बहुत तकलीफ होती है; क्योंकि जिस सड़क पर हम रिक्शा चलाते हैं वह सड़क काफी भीड़भाड़ वाली है। एक दिन हम बच्चे रिक्शे लेकर कीर्ती नगर की ओर जा रहे थे तभी रास्ते में एक गोल चक्कर आया, वहां पर हम अपने रिक्शे को मोड़ रहते थे, गलती से एक कार में टक्कर लग गई, जिसके कारण उस कार वाले व्यक्ति ने पुलिस को बुला लिया और पुलिस वाले को कार वाले ने भडका दिया। वह पुलिस वाला हमारे रिक्शे को थाने में ले जाने की बात करने लगा। मुझे दो-तीन थप्पड़ मारकर डांटने लगा, और कहने लगा कि जब तुझे रिक्शा चलाना नहीं आता है तो क्यों चलाता है। उसने मेरे से 150 रुपए लेकर मुझे छोड़ दिया। इतनी परेशानी से भी गुजरने के बाद हमारे माता-पिता को किसी भी प्रकार की चिंता नहीं होती है; फिर भी हमारे माता-पिता यही काम करने के लिए कहते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि जैसे हम पहले पढ़ाई-लिखाई कर रहे थे वैसे ही हम पढ़ाई-लिखाई करें और अपना भविष्य सुधारें।

गरीबी में होटलों पर मजबूरन काम करते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर वर्षा व रिपोर्टर चेतन

चूना भट्टी में काम करने वाले लोगों की संख्या बहुत ही ज्यादा है और यहां पर होटल अधिक से अधिक खुले हैं जिनमें ज्यादातर बच्चे ही काम करते हैं और इन बच्चों को अलग-अलग तरह का काम दिया जाता है, जो इन्हें आठ से दस घन्टों तक करना पड़ता है, जैसे लोगों को रोटी सब्जी की थाली देना, होटल साफ-सुथरा रखना। सबसे मुश्किल काम है रिक्शे पर पानी से भरा हुआ पचास किलो का ड्रम जिसे पांच किलो मीटर तक ले जाना। गर्मी पड़ने के बावजूद भी छोटे बच्चों को मजबूरी में काम करना पड़ता है। जब वह बच्चा खाली ड्रम लेकर जाता है तो कोई भी परेशानी नहीं होती है लेकिन वह बच्चा पानी भरकर लाता है तो रिक्शा तक नहीं खीच पाता। इसलिए वह रास्ते में किसी को भी अपनी मदद के लिए बुला लेता है ताकि वह रिक्शे में धक्का लगा सके। फिर होटल पर पहुंचने के बाद भी उस बच्चे को आराम करने का समय नहीं दिया जाता; क्योंकि उस होटल पर पानी भरने का काम एक ही बच्चे को दिया गया है। पानी ना होने के कारण होटल का काम रूक जाता है; जैसे सब्जी बनाना, होटल साफ करना और अन्य

तरह का काम रूक जाता है। इसलिए मजबूरन दिनभर इसी काम में लगे रहते हैं। जब लंच टाईम होता है तो इस बच्चे को खाना खाने के लिए सिर्फ बीस मिनट का समय मिलता है। इसके बाद शाम के सात बजे एक घंटे आराम करने का मौका मिलता है। एक घन्टा आराम करने के बाद फिर पांच किलोमीटर दूर पानी भरने जाता है। ग्याहर बजे होटल बंद होने के बाद भी इस बच्चे को होटल के बड़े-बड़े बर्तनो व झूठी प्लेटों को धोना पड़ता है। इसी वजह से इस बच्चे को रात के एक से दो बजे तक होटल के कामों में लिप्त रहना पड़ता है। बच्चे ने बताया कि अगर मैं रात को बर्तन नहीं धोता हूं तो मेरा मालिक मुझे मारता है और रात को खाना भी नहीं देता है। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप इस होटल पर क्यों काम करते हो? बच्चे ने बताया कि मैं यू पी के बरेली का रहने वाला हूं। मेरे माता-पिता खेतीबाड़ी का काम करते हैं। इसलिए मुझे अपने चाचा के साथ मेरे माता-पिता ने दिल्ली भेज दिया और मेरे चाचा भी इसी होटल में काम करते हैं। मुझे प्रतिमाह जो भी पैसे मिलते हैं वह मैं अपने माता-पिता को भेज देता हूं। उस पैसे को मेरे माता-पिता घर का गुजारा करने और खेतीबाड़ी करने में लगाते हैं।

झूठ बोल कर फंसाया बाल-मजदूरी में

बातूनी रिपोटर संतोष व रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने दिल्ली में दौरा किया तो पता चला कि हर महीने लगभग 10 से 15 बच्चों को काम के साथ-साथ पढ़ाने के नाम पर बिहार यू पी उत्तराखंड व नेपाल से लाया जाता है। राजधानी दिल्ली एक ऐसा शहर है, जहां फुटपाथ पर काफी सारी दुकानें लगाई जाती हैं। ये दुकानदार ज्यादातर छोटे बच्चों को ही अपनी दुकान पर काम पर रखते हैं। आइए जानते हैं किस तरह बच्चों को झूठ बोलकर दिल्ली में काम कराने के लिए लाया जाता है।

पत्रकार सड़क पर बने एक ढ़ाबे के पास पहुंचा वहां उसने 14 से 15 साल के बच्चे को काम करते हुए देखा। पत्रकार ने देखा कि वह बच्चा काफी लगन से काम कर रहा है। उस ढ़ाबे पर सिर्फ एक खाना बनाने वाला व्यक्ति था और सारा काम वह बच्चा खुद कर रहा था। जब पत्रकार ने उस बच्चे से बात करनी चाही तो वह बच्चा काफी डर रहा था।

मालिक के वहां से हट जाने के बाद 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अजीत ने बताया कि भईया मैं इसलिए आप से बात नहीं कर रहा था; क्योंकि मेरा मालिक बैठा हुआ था, अगर मेरा मालिक किसी से बात करते हुए देख लेता है, तो मुझे बहुत मारता है और खाना भी नहीं देता है।

पत्रकार ने पूछा कि आप इस ढ़ाबे पर काम क्यों कर रहे हो? बच्चे ने बताया कि भईया मेरे घर कि स्थिति बहुत खराब है, इसलिए मेरे माता-पिता ने इस मालिक के साथ ढ़ाबे पर काम करने के लिए भेज दिया। लेकिन दुख की बात यह है कि मेरे माता-पिता से ढ़ाबे के मालिक ने वादा किया था कि आपके बच्चों को पढ़ाई-लिखाई करने के लिए स्कूल भी भेजेंगे और स्कूल के आने के बाद शाम को जो भी ढ़ाबे पर काम होगा, वह कर लेगा।

लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। दिल्ली आते ही मुझे इस ढ़ाबे के काम पर लगा दिया। वर्तमान में सारा काम मुझे ही सम्भालना पड़ता है; जैसे सुबह पांच बजे ढ़ाबे की साफ-सफाई करना व झूठे बर्तन धोना तथा सब्जियां काटना आदि। पत्रकार ने इन बच्चों को खुद देखा कि प्याज इतनी तेजी में काट रहे थे जैसे कि इनके हाथ मशीन हों, और पूछा कि आप इतनी तेजी में कैसे प्याज काट लेते हो?

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) चंदन ने बताया कि भईया हम बच्चे चार-पांच सालों से इसी काम में लगे हैं, इसलिए ढ़ाबे व दुकान पर कैसा भी काम हो वह असानी से कर लेते हैं। हम बच्चों का घर जाने का मन तो बहुत करता है लेकिन हमारा मालिक घर जाने के लिए अनुमति नहीं देता। वह बोलते हैं कि अगर घर जाना है तो अपनी जगह पर किसी और दूसरे बच्चे को लगा दो तभी तुम घर जा सकते हो।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

कोठियों से काम के दौरान गायब हो रही हैं लड़कियां

रिपोर्टर शम्भू

बंगाल में अति गरीबी तंथा बेरोजगारी होने के कारण वहां के लोग नोएडा के सैक्टरों में आकर विभिन प्रकार के कामों में लगे हैं; जैसे कूड़ा कबाड़ा बीनना कोठियों में काम करना। फल-सब्जी बेचना आदि। इसी प्रकार इस क्षेत्र के कई लोग कबाड़े का काम करते हैं। मगर लोग अपनी बड़ी हो रही बेटियों को कबाड़ा बीनने नहीं भेजते हैं बल्कि इनको कोठियों पर साफ सफाई तंथा खाने बनाने के काम के लिए भेजते हैं। इसी प्रकार एक 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रेखा रोजाना कोठी पर काम करने जाती थी। रास्ते में आते-जाते समय वहां के कुछ मन चले लड़के इस लड़की को रोजाना काम पर आते जाते समय छेड़खानी करते थे। बच्ची ने इसकी शिकायत अपने माता-पिता से की, मगर बेचारे मजबूर माता-पिता क्या कर सकते थे, उन्होंने इस बात को ध्यान नहीं दिया। इसी नजरअंदाजी के कारण इस बच्ची को एक दिन काम के दौरान गायब कर दिया गया। माता-पिता ने हर जगह खोजने की कोशिश की। कोठियों में भी जाकर पता किया लेकिन कहीं भी उनकी बेटी नहीं मिली। हिम्मत हारने के बाद पुलिस थाने में अपनी बच्ची की रिपोर्ट दर्ज करवाई, मगर लगभग एक महीना बीत जाने के बाद भी इस बच्ची का कोई भी अता-पता नहीं चल पा रहा है। अब इस हादसे की वजह से और भी लड़कियां अपने काम पर जाने से डर रही हैं। इस कारण अब लड़कियों के माता-पिता अपनी लड़कियों के साथ कोठियों पर उन्हें काम के लिए खुद छोड़ने और वापस लेने जाते हैं।

बेबसी में लड़कियां हो रहीं अश्लीलता की शिकार

रिपोर्टर ज्योति

रेलवे स्टेशन पर लगभग 6 लड़कियां ऐसी हैं जो अपना पेट पालने के लिए गलत कदम उठा रही हैं। पत्रकार लड़कियों से मिला और पूछा कि आप लड़कियां गलत कदम क्यों उठा रही हो? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सपना ने बताया कि हम लड़कियां अपने घर की स्थिति खराब होने के कारण स्टेशन पर भागकर आ गए थे। लेकिन दुख की बात यह है कि हम लड़कियों को स्टेशन पर खाने-पीने के लिए दर-दर भटकना पड़ता है लेकिन आजतक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो हमारी मदद कर सके। तभी हम लड़कियों ने स्टेशन पर कबाड़ा बीनना शूरू किया, तो कुछ बड़े लड़के स्टेशन पर कबाड़ा बीनने नहीं देते थे। जब हम रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा बीनने के लिए जाते थे तो कभी-कभी बड़े लड़के मारने लगते थे और सारा कबाड़ा छीनकर वह खुद बेच देते थे। बेचने के बाद सारा पैसा वह खुद ही रख लेते थे। ऐसी परेशानियों से हम लड़कियां आये दिन गुजरती रहती हैं। लेकिन इन परेशानियों से छूटकरा नहीं मिल रहा है। जब भी हम लड़कियां रात को स्टेशन पर सोती हैं, तो बड़े लड़के हमें खाने का लालच देकर नशा करने के लिए बुलाते हैं और बोलते हैं कि अगर तुम यह नशा कर लोगी तो मैं तुम्हें खाना लाकर दूंगा। पर भूख के मारे हम लड़कियों को एक पल भी रहा नहीं जाता, अतः हम लड़कियां इन बड़े लड़कों के

झांसे में आकर नशा भी करने लगीं, फिर भी यह लोग खाना लाकर नहीं देते। जब हम लड़कियां नशा करके बेहेश हो जाती हैं, तब यह लड़के हमारे साथ अश्लील हरकत करते हैं। यह सिलसिला काफी दिनों से चलता आ रहा है। आखिर हम लड़कियों की एक ऐसी लड़की से मुलाकात हुई जो पैसों के लिए गलत काम करती है। वह हमें अपनी कहानी बताने लगी कि मैं भी पहले घर से भागकर स्टेशन पर आ गई थी। मेरे साथ भी इस तरह का व्यवहार हो चुका है। अब मैं भी पैसे लेकर अश्लील कामों में लिप्त हो गई हूं। हम लड़कियों ने सोचा कि स्टेशन पर तो हमारा गुजारा होने वाला नहीं है। अब हम लड़कियां भी पैसे कमाने के लिए गलत कदम उठा रही हैं।

बड़े लोगों व पुलिस दबंगई में रात में कबाड़ा चुनने को मजबूर बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर रहने वाले बच्चे ने अपनी दुखभरी खबर बताते हुए कहा कि हम बच्चे बहुत मुश्किल से कुछ बोतल इकट्ठा कर पाते हैं; क्योंकि आजकल स्टेशन पर पुलिस हम बच्चों को बहुत परेशान करती है। हम बच्चे गलत काम नहीं करते हैं फिर भी हम बच्चों को मारती-धमकाती रहती है।

पत्रकार ने ऐसे ही एक 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजेश से मिला जिसको रात में स्टेशन पर घूमने की वजह से पुलिस वाले ने जमकर पिटाई की और इस बच्चे के शरीर पर काफी सूजन भी आई हुई थी। बच्चों का कहना है कि पुलिस अत्याचार हम बच्चों पर दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। रात में हम बच्चे स्टेशन पर जब सोए होते हैं तो लात मारकर उठा देते हैं। यह तो एक परेशानी है, दूसरी परेशानी यह कि कुछ दिनों से इस स्टेशन पर बाहर से कुछ बड़े व्यक्ति कबाड़ा बीनने के लिए आने लगे हैं इन्होंने सारे डिब्बो में कब्जा कर रखा है। जैसे ही हम बच्चे रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो हम बच्चों को रेलगाड़ी में से धक्का मारकर बाहर निकाल देते हैं। इस परेशानी को लेकर हम बच्चों ने इन बड़े व्यक्तियों से बात की कि आप हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हो? तो वह गाली देते बोले कि यह स्टेशन तेरे बाप ने बनाया है, जो तूं ही कबाड़ा बीनेगा। हमने बड़े व्यक्ति से बोला कि हम बच्चे काफी समय से इसी स्टेशन पर कबाड़ा चुनकर अपना गुजारा कर रहे हैं, इस पर बड़े व्यक्ति ने कहा कि अब से तुम्हारा राज खत्म, अब हमारा राज शूरू। अगर कोई रोकने की कोशिश करेगा तो उसके लिए बहुत बुरा होगा।

17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) लोकेश ने बताया कि हम बच्चों को लग रहा था कि यह लोग हम बच्चों को ऐसे ही डरा-धमका रहे हैं। हकीकत जानने के लिए जब हम बच्चे रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा बीनने पंहुचे तो इसने रेलगाड़ी में सवार यात्रियों का बैंग चोरी कर लिया और इसका इल्जाम मुझ पर लगा दिया। यात्रियों को हमारे बारे में उल्टा-सीधा समझाने लगे कि यह बच्चा काफी देर से इस डिब्बे के अंदर कबाड़ा चुन रहा था। इसी बच्चे ने आपका बैंग चोरी किया है। यह बात सुनते ही यात्री हमें मारने के लिए दौड़ पड़े। इसलिए आजकल हम बच्चे पूरी रात जाग कर कबाड़ा चुन रहे हैं। बच्चो का कहना है कि इन लोगों के खिलाफ जल्द से जल्द कार्यवाही करनी चाहिए, नहीं तो हम बच्चों का जीना मुश्किल कर देंगे।

परिवार के साथ दर-दर भटकते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सोनिया व शम्भू

बदायूँ (उत्तर प्रदेश) में अति गरीबी तंथा बेरोजगारी है इसलिए अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए यहां के अधिकतर लोग नोएडा में आकर खेतीवाड़ी का ठेका ले लेते हैं। ये लोग खेतों के मालिक को साल भरके एकमुश्त पैसे दे देते हैं, उसके बदले में उनके खेत पर तीन-चार फसलें उगाते हैं। खेत का मालिक तो एक बार पैसा लेकर निश्चिंत हो जाता है। मगर इन परिवारों को अपनी लगन के साथ मेहनत करनी पड़ती है जैसे खेत की जुताई-बुवाई, फसलों की सुरक्षा तथा मौसम के अनुसार फसलों की देखरेख करना व सही समय पर खाद्य व कीड़े की दवाई डालनी पड़ती है। इन परिवारों के मासूम बच्चे भी अपने माता-पिता के साथ खेतों में रात-दिन काम करने को बेवश हैं। खेतो के हर काम में यह बच्चे अपने परिवार की मदद करते हैं। काम के चलते ही ये बच्चे लगातार अपने बाल अधिकारों से वंचित होते चले जा रहे हैं। बच्चे जुलाई माह में स्कूल खुलते ही स्कूल जाना शूरू कर देते हैं। फरवरी-मार्च-अप्रैल में पढ़ाई की परीक्षा देते हैं। परीक्षाओं का रिजल्ट आते ही मई-जून की गर्मी में बच्चों को दो माह की छुट्टी मिल जाती है। इन बच्चों को जून से लेकर जुलाई तक बारह माह तक लगातार खेतों में जुताई बुवाई, फसल सुरक्षा और फसल कटाई में ही लगे रहना पड़ता है।

नशे के शिकार होते मासूम

बालकनामा ब्यूरो

खेलने-कूदने और पढ़ाई-लिखाई करने की उम्र में 8 से 16 साल के बच्चे गलत संगतो में पड़ते जा रहे हैं। कई तरह का नशा करना भी सीख रहे हैं। ऐसी ही एक जगह की यहां चर्चा की जा रही है जिसका नाम गुप्त रखा गया है। जहां पर बच्चें खुलेआम गुटखा, तम्बाकू, गांजा और स्मैक का भी नशा करते हैं। जिस दुकान में गांजा स्मैक बिकता है, उसका दुकानदार इन छोटे बच्चों को गांजा, स्मैक देने से कभी मना नहीं करता है। जो बच्चे नशा करते हैं, उनको किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता है। इनके माता-पिता सुबह ही काम पर चले जाते हैं, जैसे ही माता-पिता अपने काम के लिए निकलते हैं, वैसे ही बच्चे अपने घर में दोस्तों को बुलाकर एक साथ नशा करना शूरू कर देते हैं। पत्रकार को पता चला कि यह छोटे बच्चे अपने दोस्तों के साथ इकट्ठे होकर अपने ही घर में नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं। लेकिन दुख इस बात का है कि इन बच्चों के माता-पिता को इस बात की भनक तक नही हैं कि इनके बच्चे दिनभर क्या करते हैं। इनके माता-पिता सुबह ही काम पर चले जाते हैं और रात आठ बजे तक घर लौटते हैं। ऐसी स्थिति में माता-पिता अपने बच्चों का ख्याल कैसे रख सकते हैं। इस मोहल्ले में पुलिस अधिकारी भी चक्कर लगाने के लिए नहीं आते हैं जिससे इन बच्चों के अंदर बिल्कुल भी डर नही हैं। गांजा, स्मैक का नशा करने वाले बच्चों में से पत्रकार ने एक बच्चे से बात की। उस बच्चे ने बताया कि भूतकाल में हम बच्चे नशा नही करते थे लेकिन यहां कुछ बड़े बच्चे ऐसे हैं जो दिनभर नशा करते हैं वह हमारे साथ ही हमारे मोहल्ले में रहते हैं। इसी कारण वह हम बच्चों से दूर नहीं जाते और हमें बहला-फुसलाकर पार्कों में खेलने के लिए ले जाते हैं। वहां अकेले में हम बच्चों को डरा-धमका कर नशीले पदार्थ खरीदने के लिए भेजते हैं। हम बच्चे नशा खरीदने के लिए जाने से मना करते हैं तो बड़े बच्चे मारने लगते हैं। इस कारण हम बच्चे नशा खरीद कर लाते हैं। नशा खरीद कर लाने के बाद वही बड़े बच्चे हम बच्चों को नशा करने के लिए भी बोलते हैं। अगर हम नशा नहीं करते हैं तो जबरदस्ती नशा कराते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि हम बच्चे चाहते हैं कि इन बड़े बच्चों के खिलाफ जल्द से जल्द कार्यवाही की जाए, ताकि हमारे जैसे अन्य बच्चे नशे की गिरफ्त में आने से बच सकें।

समूह बनाकर बच्चों से करवाते हैं नशे की सप्लाई

रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशन व लालबत्ती सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए नशे का अड्डा बनता जा रहा है। हाल ही में पता चला कि चार पांच बड़े व्यक्ति, जो बच्चों का समूह बनाकर चोरी छूपे सुलेशन का नशा बेचने का काम करवा रहे हैं। जब पत्रकार ने इन बच्चों को चोरी छूपे नशा बेचते हुए देखा, तो चैंक गया। आजकल बच्चे लालबत्ती पर भी नशा बेचने लगे हैं। उसने इस संबंध में बच्चों से बात करने की कोशिश की। उसने देखा कि नशा बेचने वाले बच्चे काफी डरे हुए थे। वे पत्रकार को देखते ही भागने लगे। पत्रकार ने उन बच्चों से अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं भी आपकी तरह बच्चों के लिए काम करता हूं और हम आपको नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं आए हैं। मैं तो सिर्फ आप जैसे बच्चों की मदद करना चाहता हूं। इतना सुनते ही बच्चे पत्रकार के पास आकर बातचीत करने लगे। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को यह नशा बेचने के लिए कौन बोलता है? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुजित ने बताया कि भईया हमारा एक मालिक है जिसने हम बच्चों का एक समूह बना रखा है और वह बाजार से नशा लाकर हम सबको देता है। हम बच्चे अलग-अलग जगह; जैसे स्टेशन, लालबत्ती व भीड़भाड़ वाली जगहों पर यह नशा बेचने के लिए जाते हैं और हम बच्चों से खासकर बोला जाता है कि ज्यादातर उन बच्चों के पास जाना जो कबाड़ा व भीख मांगते हैं; क्योंकि ज्यादातर यही बच्चे नशे में लिप्त रहते हैं। यह बच्चे नशे की खोज में इधर-उधर भटकते रहते हैं। अगर तुम उन बच्चों के पास जाओगे तो यह बच्चे खुद नशा खरीद लेंगे; चाहे तुम कितना भी मंहगा दो, वे ले लेंगे। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को नशा बेचते वक्त डर नहीं लगता है? बच्चों ने बताया कि भईया हमारे मालिक ने हम बच्चों को पहले से ही ट्रेनिंग दे रखी है कि अगर कभी पुलिस वाले भी तुम बच्चों को पकड़ते हैं, तो तुम चाकू व नुकीली चीजों का प्रयोग करके भाग जाना। अगर कभी हम बच्चे पुलिस के चंगुल में फंस भी जाते हैं तो हमारा मालिक हम बच्चों की मदद नहीं करता है। पत्रकार ने पूछा कि आप बच्चों को यह काम करने के कितने पैसे मिलते हैं? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राकेश ने बताया कि एक दिन के सौ रुपए मिलते हैं और साथ ही साथ हमें दो नशे के डिब्बे मुफ्त में मिलते हैं; ताकि हम बच्चों को नशा खरीदने के लिए कहीं जाना ना पड़े। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रंजीत ने बताया कि हम बच्चे चाहते हैं कि हमसे चोरी छूपे और खुलेआम नशा ना बिकवाया जाए; क्योंकि इससे हमारा भविष्य अंधकार की ओर जा रहा है।

नाला बना बच्चों के लिए एक खौफनाक डर

बालकनामा ब्यूरो

पश्चिमी दिल्ली में बसी एक बस्ती जिसका नाम गुप्त रखा गया है। इस बस्ती में लगभग 1500 सौ झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों के बीच एक बहुत बड़ा गहरा नाला है, जिसमें आये दिन घटनाएं घटती रहती हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी प्राप्त हुई और पता चला कि इन झुग्गियों में रहने वाले सभी माता-पिता कामकाजी हैं, इसलिए अपने बच्चों को बड़े.बुजुर्गों के भरोसे घर पर छोड़कर जाते हैं। बड़े बुजुर्ग इन छोटे बच्चों का ख्याल नहीं रख पाते हैं। बड़े.बुजुर्ग भी अपने घरेलू कामो में लिप्त रहते है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कृष्णा ने बताया कि भईया जब हमारे माता-पिता काम करने के लिए बाहर जाते हैं तो हम बच्चों को बहुत डर लगता है। कहीं हम बच्चे भी इस नाले का शिकार ना हो जाएं। इस खतरनाक नाले में काफी लोग तथा बच्चे व जानवर भी गिर चुके हैं और उन्हें अपनी जिंदगी भी खोनी पड़ी है। पत्रकार ने बच्चों के माता-पिता से मुलाकात की और उनकी मजबूरी जाननी चाही कि वे इस जगह पर क्यों रह रहे हैं और ऐसी क्या समस्या है कि अपने बच्चों को छोड़कर आपको काम करने जाना पड़ता है। 35 वर्षीय श्रीमती कमला देवी जो बिहार के मध्यपुरा जिले की रहने वाली हैं; इन्होने बताया कि हम अपने बच्चों को इसलिए झुग्गी में अकेले छोड़कर जाते हैं, ताकि हमारा घर का खर्चा चल सके। अगर हम काम करने बाहर नहीं

जाएंगे, तो हमारे परिवार को भूखे ही रहना पड़ेगा। अगर हम अपने बच्चे को काम पर ले जाते हैं तो हमारी मालकिन बोलती है कि तुम यहां पर बच्चे को खिलाने आई हो या मेरे घर का काम करने? इसलिए मजबूरी में हम अपने बच्चों को भगवान के भरोसे पर छोड़ कर काम पर जाते हैं। जब तक हम काम पर रहते हैं तब तक हमें अपने बच्चों की चिंता सताती रहती है कि मेरा बच्चा पता नहीं घर पर अकेले कैसे रह रहा होगा? घर आने के बाद उन्हें देखकर संतुष्टी मिलती है और बताया कि हम इस जगह से अपनी झुग्गी भी नहीं बदल सकते हैं; क्योंकि हमें पता है कि अगर हमने ऐसा किया तो हम लोगों को सड़क पर ही रहना पड़ेगा। हम लोगों ने इस नाले की परेशानी अपने विद्यायक जी को बताई थी लेकिन उनका कहना है कि यह तो बहुत बड़ा सरकारी काम है, इसलिए हम कुछ नही कर सकते हैं।

झुग्गी टूटने पर बच्चे काम करने के लिए लाचार

बातूनी रिपोर्टर प्रिती रिपोर्टर ज्योति

दक्षिणी दिल्ली का एक क्षेत्र जिसका नाम गुप्त रखा गया है वहां पर भूतकाल में लगभग तीन सौ से चार सौ बच्चे रहते थे। वहां पर जितनी भी झुग्गी-झोपड़ी थीं उनको तोड़कर वर्तमान में कबाड़ खाने का गोदाम बना दिया गया है। रहने की मुश्किल व काम नहीं मिलने की वजह से माता-पिता के साथ बच्चे अपने गांव चले गए। लगभग दो साल पहले यह बच्चे खुशी से अपने परिवार के साथ कूड़ा बीनने और छंटाई का काम करते थे; और साथ ही स्कूल भी जाते थे लेकिन झुग्गियां टूटने की वजह से सारे बच्चे बेघर हो गए। इनके रहने का कोई ठिकाना नहीं था। बच्चों ने बताया कि तीन माह तक इन बच्चों के माता-पिता अपने काम के लिए व रहने के लिए इधर-उधर भटकते रहे; लेकिन रहने का कोई ठिकाना नही मिला, जहां पर यह बच्चे सुरक्षित रह सकें। इसलिए इनके माता-पिता ने अपने गांव जाने का निणर्य लिया। गांव जाने के बाद यह बच्चे अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए बेवश हैं। हाल ही में 15 वर्षीय राहुल गांव से आया; और काम की तलाश में भटकते हुए उसकी मुलाकात पत्रकार से हुई। उसने अपने गांव की दशा बताते हुए कहा कि जो बच्चे पहले इस जगह पर रहकर कबाड़ा बीनने के लिए जाते थे, गांव जाने के बाद उन बच्चों का बहुत बुरा हाल हो गया है। अब उन्हें अपने घर का खर्चा चलाने के लिए माता-पिता के साथ खेतों में जबरन काम करना पड़ता है। पहले यहां पर वह बच्चे पढ़ाई-लिखाई भी करने के लिए जाते थे; लेकिन गांव जाने के बाद पढ़ाई-लिखाई से भी दूर हो गए हैं। सिर्फ कामों में लिप्त रहते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) बाबू का कहना है कि हमारे माता-पिता सरकारी जमीन पर घर बना रखे हैं, इसलिए हमें डर लगा रहता है कि कहीं सरकार हमारा घर ना तोड़ दे। जिसकी वजह से हमारे परिवार को उन बच्चों की तरह रहने व काम के लिए दर-दर भटकना ना पड़े। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गणेश ने बताया कि अगर सरकार हमारा घर ताड़ भी देती है तो सरकार को दूसरी जगह पर रहने के लिए घर देना चाहिए ताकि हम बच्चे को फुटपाथ पर ना रहना पड़े ।

बड़े व्यक्ति बच्चों को जबरन नशे की ओर ले जाते हैं

बालकनामा ब्यूरो

दक्षिणी दिल्ली की एक विशेष बस्ती जिसमें रहने वाले सभी बड़े व्यक्ति तथा बुजुर्ग नशा व जुआं खेलते रहते हैं। इसी जगह पर एक बहुत बड़ा जंगल भी है। इस जंगल में लोग अपने परिवार वालों से छुपके नशा करते हैं। कुछ कामकाजी बच्चे भी अपने दोस्तों के साथ जंगल में खेलने के लिए जाते हैं। यह लोग अपने परिवार वालों से इतना डरते हैं कि कहीं इनको नशा करते हुए देख लिया तो घर से बाहर निकाल देंगे। इसलिए यह लोग जंगल में खेलते हुए छोटे बच्चों को अपना मोहरा बनाते हैं, ताकि इनके परिवार वालों को पता नहीं चल सके कि यह लोग नशा भी करते हैं। अगर कोई बच्चा नशा लाने से मना करता है तो यह लोग मारने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। इसी भय में बच्चे इन लोगों का शिकार हो रहे हैं। यह लोग बोलते हैं कि तुम मेरे लिए दुकान से शराब व पानी की बोतल लेकर आओ तो बच्चे डर से चले जाते हैं। दुकानदार भी इन छोटे बच्चे को शराब देने से मना नहीं करता है। जब बच्चे नशा लेकर इन लोगों के पास पंहुचता है तो इनाम के तौर पर इन बच्चों को नशा करने के लिए बोलते हैं। यह बच्चे नशा करने से मना करते हैं, तो जबरदस्ती इनके हाथ पकड़ कर शराब पिलाते हैं। यह सिलसिला लगभग सात माह से चल रहा है। इससे पहले यह लोग कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए बाहर जाते थे तो उसी जगह पर नशा कर लेते थे, लेकिन जब से यह लोग रिक्शा चलाने का काम करने लगे हैं, तब से बच्चों को इस तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस बात को लेकर बच्चों ने अपने माता पिता से भी चर्चा करी। इन बच्चों के माता पिता इन्हें ही डांटने लगे कि तुम्हें जंगल में खेलने की क्या जरूरत है। बच्चों का कहना है कि हम बच्चे इसी जंगल में खेलना चाहते हैं; क्योंकि इस जंगल में ठंड़ी हवा तथा कोयल की मधुर आवाज़ आती है, इसलिए हमारा इस जंगल में मन लगा रहता है।

पानी भरने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सपना व शम्भू

पत्रकार ने विजिट के दौरान देखा कि बदरपुर बोर्डर में बसी एक बस्ती सांसी कैम्प में रह रहे बच्चे पानी भरने के लिए बदपुर बोर्डर के इस पार से उस पार जा रहे थे। जहां की सड़कों पर टैजफिक भी बहुत तेजी से चलता है। उसके बाद भी इन बच्चों के सिर पर 15 से 20 लीटर पानी का भरा डिब्बा लदा रहता है जिसे यह बच्चे बदरपुर बोर्डर से सांसी कैम्प बस्ती तक पैदल लेकर आते हैं। यह देख पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की। तुम रोज इतनी दूर पानी भरने क्यों जाते हो, तो 15 वर्षीय सपना ने अपनी परेशानी के बारे में बताते हुए कहा कि हमें सांसी कैम्प में पानी नहीं मिलता है, क्योंकि यहां पानी की सुविधा नहीं है। इसलिए हम सभी बच्चे पानी के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। 15 वर्षीय मुस्कान ने कहा कि सरकार को जब हमारी जरूरत पड़ती है, तो वह हमारे पास वोट मांगने आ जाती है और

वोट ले लेती है लेकिन हमें क्या परेशानी आ रही है यह जानने की कोशिश कभी नहीं करती। यहां के 10 साल से लेकर 17 साल तक की उम्र के बच्चे सांसी कैम्प से बदरपुर बोर्डर पर पानी भरने को जाते हैं। हम बच्चों को कम से कम तीन जगह सड़क पार करनी होती है। हर एक बच्चे को बीस लीटर के पानी के डिब्बे का भार उठाना पड़ता है। सभी आने जाने वाले लोग हमें देखते हैं। लेकिन कोई भी यह जानने की कोशिश तक नहीं करता है कि कितनी मेहनत के बाद हम बच्चों को पानी मिलता है। हमारे यहां पीने का पानी नही आता है और इसलिए हमें यहां पानी भरने आना पड़ता है। फिर भी हमें यहां आकर कभी-कभी पानी भी नसीब नहीं होता है। जिस दिन हमें पानी नहीं मिलता, उस दिन हम बच्चे प्यासे रह जाते हैं, या फिर गंदा पानी पीना पड़ता है; जिसकी वजह से हम बच्चे बीमार पड़ जाते हैं। पत्रकार ने पूछा कि क्या यहां पानी का टैंकर नही आता है? बच्चों ने बताया कि टैंकर नही आता है। हमने बहुत कोशिश की है इसके लिए, पर कोई फायदा नहीं हुआ। अगर कभी-कभी टैंकर आता भी है तो महीने में एक बार आता है। हम बच्चे बदरपुर बोर्डर से ही पानी भरने के लिए जाते हैं अगर हमारे यहां पर पानी का टैंकर रोज आए तो हम बच्चों को इतनी दूर पानी भरने नहीं जाना पडेगा। इससे जो हमारा समय बचेगा, उसका सदुपयोग हम बच्चे अपनी पढ़ाई और खेलने में कर सकेंगे।

लड़कियों की सुरक्षा में पूरी रात जाग रहे हैं माता-पिता

रिपोर्टर शम्भू

पुल के नीचे रहने वाली लड़कियों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान चर्चा हुई कि जो लड़कियां पुल के नीचे रहती हैं उनको किस तरह की परेशानियों से गुजरना पड़ता है? इसी विषय पर बालकनामा के पत्रकारो ने लड़कियों से जायजा लिया। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधा ने बताया कि भईया पुल के नीचे तो आये दिन घटना घटती रहती हैं; जैसे पुल के नीचे हमारे आस-पास कुछ बडे. व्यक्ति भी रहते हैं, जो पूरे दिन गुंडागर्दी व नशा में लिप्त रहते हैं। इनका काम यही है कि दूसरे व्यक्तियों को परेशान करना। जैसे कि स्टेशन पर रेलगाड़ी के अंदर लोगों की जेब काटना या छोटे बच्चों को परेशान करना। इतना ही नहीं; जब लड़कियां पुल के नीचे रात को सोती हैं तो आधी रात को किसी भी लड़की के पास नशे में धुत ये सो जाते हैं और उनके साथ गलत काम करने की कोशिश भी करते हैं। लड़कियों ने इसके खिलाफ आवाज़ भी उठाई थी, पर कुछ नहीं हुआ। लड़कियों के माता-पिता को धमकी दी जाती है कि अगर ज्यादा बोलोगे तो तुम्हारे साथ अच्छा नहीं होगा। डर से लड़कियों के माता-पिता कुछ नही कर पाते हैं। लगभग दो महीने पहले की बात है। एक व्यक्ति नशा करके एक बच्ची की मम्मी के पास सो गया और गलत काम करने की कोशिश करने लगा, वह जोर से चिल्लाई, फिर सारे लोग जगे और उस नशे में धुत व्यक्ति को मारकर भगाया। यही नहीं जब हम लड़कियां नए वस्त्र पहनती हैं तो यहां के व्यक्ति गलत नजरिये से देखते हैं और अश्लील बातें भी बोलते हैं। लड़कियों ने बताया कि जब हम लड़कियां सोती हैं, तब हमारे परिवार का एक सदस्य पूरी रात हमारी सुरक्षा करने के लिए जगता है।

बारिश में कहां और कैसे रहें सड़क एवं कामकाजी बच्चे?

बातूनी रिपोर्टर भोलू व शम्भू

बालकनामा के पत्रकारो ने लिया जाएजा। पुल के नीचे सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताया कि हम बच्चे जब बारिश होती है, तो हमारे रहने का सामान गीला हो जाता है जिसके कारण बच्चों को बहुत समस्या होती है। हमारा सारा का सारा भोजन का सामान खराब हो जाता है, क्योंकि उस भोजन में बारिश का पानी भर जाता है। इस कारण हम बच्चो को भूखे पेट रहना पड़ता है। अगर पूरे दिन लगातार बरिश होती है तो रात भर हम बच्चे ठीक से गीली जगह में सो नहीं पाते हैं। क्योंकि गीले में सोने से हमें ठंड बहुत लगती है जिससे हम बीमार भी पड़ जाते हैं और अगले दिन हम अपनी दवा दारू भी नहीं कर पाते हैं क्योंकि बारिश की वजह से हम बच्चे कबाड़ा और भीख भी नहीं मांग पाते हैं, जिस कारण हमारे पास पैसों का अभाव होता है और हम अपना इलाज भी नहीं करा पाते हैं। 15 वर्षीय(परिवर्तित नाम) राजा ने बताया

कि बारिश होने की वजह से सड़क पर काफी पानी जमा हो जाता है और जब बसए कारए ट्रक तंथा मोटरसाईकिल इस सड़क से तेज रफ्तार में चलते हैं, तो जमा हुए बारिश के पानी के छींटे हमारे ऊपर आ जाते हैं। इसलिए थोड़ी बहुत सूखी जगह रहती है वह भी गीली हो जाती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे लिए एक ऐसी सुरक्षित जगह पर घर बना दें; ताकि हम बच्चे वहां बारिश में भी सुरक्षित रह सकें और ऐसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े।

समर्पण और मित्रता को सलाम

बातूनी रिपोर्टर सलमान व शम्भू

यह खबर दो मित्रों की है। यह दोनों मित्र अपने घर कि स्थिति खराब होने के कारण घर से भागकर स्टेशन पर आ गए थे। वर्तमान में यह पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रहकर दूसरे बच्चों की हर वक्त मदद के लिए समर्पित हैं। साथ ही दोनों बालकनामा अखबार के बातूनी रिपोर्टर भी हैं। इन दोनों मित्र में एक बहुत अच्छी खूबी है कि यह दोनों हर वक्त एक साथ रहते हैं और जितने भी स्टेशन पर छोटे बच्चे मुसीबत में नजर आते हैं, उनकी हमेशा मदद करते है, साथ ही दोनों मित्र अपना पेट पालने के लिए इसी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने का काम करते हैं ताकि इनका अपना गुजारा हो सकें। हाल ही की बात है, तीन बच्चे अपने माता-पिता के साथ लालकिला घूमने के लिए आए थे। लालकिला में काफी भीड़भाड़ होने की वजह से अपने माता पिता से बिछुड़ गए और रोते-रोते स्टेशन की सफाई लाईन पटरियों के पास आ गए; तभी आचानक यह दोनों मित्रों की निगाहें उन तीनों बच्चों पर पड़ी। यह दोनों मित्र उन बच्चों के पास पहुंचे। उन बच्चों से बातचीत करी और कहा कि आप बच्चे क्यों रो रहे हो? उनसे पूछा कि कहां से आए हो? इन तीनों बच्चों में से 10 वर्षीय गोपाल ने बताया कि हम तीनों दोस्त अपने माता पिता के साथ लालकिला घूमने आए थे लेकिन हम तीनों दोस्त अपने माता-पिता से बिछुड़ गए हैं। हम बच्चों ने अपने माता पिता को लालकिले के पास ढूढने की कोशिश की, पर हमारे माता पिता कहीं नहीं मिले। यह बात सुनते ही यह दोनों मित्र लालकिले के पास पंहुचे और इन बच्चों के माता पिता को ढूंढ़ना शुरू किया। काफी जगह खोजने के बाद लालकिले के बाहर इन बच्चों के माता पिता रो रहे थे। सलमान ने इन बच्चों के माता पिता को समझाते हुए कहा कि आप अपने बच्चों का ध्यान रखा करो। आप लोग जब भी घूमने के लिए आते हैं तो भीड़भाड़ वाली जगहों पर अपने बच्चों का ध्यान रखा करो। इन दोनो मित्रों को बच्चों के माता पिता ने धन्यवाद बोला और उपहार के तौर पर कुछ पैसे भी दे रहे थे लेकिन इन दोनों पैसे नहीं लिए। बोला कि चाचीजी हम तो यूंही बच्चों की मदद करते रहते हैं तभी तो हम खोजिया पत्रकार कहलाते हैं। इसी तरह इन दोनों मित्र ने बच्चों के माता पिता को भी बालकनामा अखबार के बारे में जानकारी दी।

क्या आप उठाएंगे साहीन के परिवार का खर्चा?

बातूनी रिपोर्टर साहीन रिपोर्टर दीपक

10 वर्षीय साहीन अपने परिवार के साथ शकूरबस्ती में रहती है। साहीन के परिवार में कुल दस सदस्य हैं। आठ भाई-बहन और दो मम्मी पापा। साहीन के बड़े भाई की शादी हो गई है, वह अपने परिवार के साथ अलग रहता है। उनको अपने भाई-बहनों व माता-पिता से कोई लेना-देना नहीं है। साहीन के पिता रिक्शा चलाने का काम करते हैं, वे शराब भी पीते हैं। साहीन ने बताया कि मेरे पापा जितने भी पैसे रिक्शा चलाने में कमाते हैं, इनमें से कुछ घर पर देते हैं और बाकी पैसों की दारू पी जाते हैं। साहीन के आठ भाई-बहनों में से चार भाई-बहन पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाते हैं, बाकी चारों साहीन के कामों में हाथ बटाते हैं। साहीन भी भूतकाल में तीसरी कक्षा में पढ़ाई करती थी लेकिन घर की स्थिति खराब होने के कारण स्कूल जाना छोड़ दिया और अन्य तरह के कामों में लग गई। साहीन को अपने भाई बहन का पालन पोषण करने के लिए कोयले और सीमेंट बेचने का काम शूरू किया जहां से साहीन कोयला और सीमेंट लाती है उस जगह का नाम है शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन इस स्टेशन पर ज्यादातर कोयले और सीमेंट की रेलगाड़ी आती जाती है औवरलॉड गाड़ी होने के वजह से कुछ कोयले गिर जाते है और रेलगाड़ी जाने के बाद साहीन पट्रीयों पर कोयले बीनती है और उसे ढ़ाबे तंथा होटलो में जाकर बीस रुपए प्रति किलो बेच देती है । इसके बावजूद भी साहीन को इतना पैसा नही मिल पाता है कि जिसमें इनका परिवार का गुजारा हो सके क्योंकि 50.60 रुपए में भला दस लोगो का पेट कैसे पल सकता है इसलिए साहीन कोठी में भी काम करने के लिए जाती है लेकिन दुख कि बात यह कि साहीन खुद इतनी छोटी है कि कोठी का काम कर ही नही पाती साहीन का कहना है कि अगर कोई हमारे परिवार का खर्चा उठा ले तो मैं अपने भाई बहन कि तरह दोबारा स्कूल में पढ़ने जाया करूगी ।

आज के समाज में सुरक्षित नहीं बेटियां

बालकनामा ब्यूरो

आगरा के कुछ इलाके में लड़कियां भूतकाल में सुरक्षित रहती थीं। वे पढ़ने के लिए स्कूल जाती थीं। इन लड़कियों पर किसी भी प्रकार की रोक-टोक नहीं थीं। स्कूल से आने के बाद भी इधर-उधर घूमने के लिए बेझिझक जाती थीं। लेकिन वर्तमान में लड़कियों को स्कूल जाने और घर से बाहर निकलने के लिए मना किया जाता है; क्योंकि दो महीने पहले एक 15 वर्षीय बच्ची के साथ एक व्यक्ति ने दुष्कर्म कर दिया जिसकी वजह से बच्ची की मृत्यु हो गई। बच्ची अपने घर से रोजाना पढ़ने के लिए स्कूल जाती थी। रास्ते में आते-जाते कुछ मन चले व्यक्ति जो उसी रास्ते में नशा करते थे, और रास्ते में आती-जाती लड़कियों व महिलाओं को परेशान करते थे। डर के मारे कोई भी लड़की व महिला इनके खिलाफ आवाज़ नहीं उठा रही थी। एक दिन यह बच्ची अपने स्कूल से लौट रही थी, तभी यह व्यक्ति बच्ची के साथ छोड़खानी करने लगा। बच्ची ने इसे थप्पड़ मार दिया। उस

दिन से यह व्यक्ति बालिका पर कड़ी नजर रखने लगा। कुछ दिनों के बाद ही जब यह बच्ची स्कूल से लौट रही थी, तभी इस व्यक्ति ने अकेले व सुनसान जगह का फायदा उठा कर बच्ची के साथ बड़ी ही बेरहमी से दुष्कर्म किया, जिसमें इस मासूम बच्ची के शरीर पर बहुत ही बुरी तरह से चोटें आईं। इस खौफनाक डर से माता-पिता अपनी बेटियों को घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं। काफी लड़कियों के माता-पिता ने अपनी बच्चियों का स्कूल से नाम कटवा लिया है। लड़कियों के माता-पिता को इस बात का डर है कि कहीं हमारी बच्चीयों के साथ दुष्टकर्म ना हो जाए। ये लड़कियां इसी विषय से चिंतित हैं कि अब हमारा पढ़ाई करने का सपना अधूरा ही रह जाएगा। लोगों का कहना है कि यहां आये दिन ऐसी घटनाएं घटती रहती हैं। लड़कियों व महिलाओं का इस जगह पर रहना बहुत मुश्किल हो रहा है। लेकिन ऐसे व्यक्ति के खिलाफ कोई आवाज़ उठाने के लिए तैयार नही है जो इस व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सजा दिला सके ।

रंजीत की चाह; पापा में आए बदलाव

बातूनी रिपोर्टर रंजीत व दीपक

16 वर्षीय रंजीत आज से 10 साल पहले अपने परिवार के साथ गाजियाबाद में गुजर बसर कर रहा था। रंजीत के तीन छोटे भाई हैं, जो प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं। यह देखकर रंजीत के मन में भी लालसा जागी कि मैं भी अपने छोटे भाई की तरह पढ़ाई करने स्कूल जाऊं। इसी लालसा को लेकर उसने अपने पापा से बात की कि मुझे भी छोटे भाईयों कि तरह स्कूल में पढ़ाई करनी है। यह बात सुनकर पापा घबड़ा गए कि मुझ से तीन बच्चों की स्कूल की फीस नहीं दी जाती। अगर तूं भी पढ़ने लगा तो तेरा खर्चा मैं कहां से लाऊंगा? इसी सोच में पापा खो गए। उस वक्त पापा ने मुझे कुछ नही जवाब नही दिया। लेकिन इसी विषय से मैं उदास रहने लगा। यह देखकर पापा ने मेरा स्कूल में दालिखा करा दिया। लेकिन किसी वजह से मेरे पापा को नौकरी से निकाल दिया गया, तो मेरे पापा मुझसे गाली-गलौज से बात करने लगे और कहने लगे कि तूं मेरी जिंदगी में परेशानी लेकर आया है। जैसे ही तूं स्कूल जाने लगा, वैसे ही मेरी नौकरी तूंने छीन ली, और मेरे सामने पापा रोने लगे। इस परेशानी को लेकर मेरे पापा ने मेरा स्कूल से नाम कटवा दिया। घर का खर्चा व छोटे भाई की स्कूल की फीस भरने के लिए मुझे एक लोहे की वेल्डिंग की दुकान पर काम करने के लिए लगा दिया। इस लोहे की दुकान पर मुझे काम करने में बहुत तकलीफ होती थी। क्योंकि जब लोहे की वेल्डिंग करते थे, तो लोहे में से चिंगारी बहुत निकलती थीं जिसकी वजह से हाथ-पैर जल जाते थे। चिंगारी की तेज आंच लगने की वजह से मैं सही से काम भी नहीं कर पाता था, तो मालिक मुझे गाली-गलौज करता था। फिर भी मैंने अपनी हिम्मत नहीं हारी और कुछ महीनों तक लगातार काम करता रहा। लेकिन जब मालिक अपनी हद से बाहर जाने लगा तो मैंने निणर्य लिया कि अब इस दुकान पर काम नहीं करूंगा। पर मुझे अपनी परेशानी पापा को बताने में बहुत डर लग रहा था। हिम्मत करके पापा को सारी परेशानी बताई। इसके बाद पापा ने परेशानी को सुनकर मुझे चाऊमीन की दुकान पर लगा दिया, जहां मुझे झूठी प्लेट व दुकान की साफ-सफाई करनी पड़ती थी। ये मालिक तो पहले वाले मालिक से भी खतरनाक था। छोटी-छोटी बातों पर गंदी-गंदी गालियां देता था। एक दिन मैं किसी वजह से काम पर लेट पहुंचा तो मालिक ने मुझसे कुछ पूछे बिना मारने-पीटने लगा। इसी कारण से मैंने यह काम भी छोड़ दिया और अपने घर चला गया। घर जाते ही पापा भी मुझ पर ही गुस्सा होने लगे। यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा और अपने परिवार का साथ छोड़कर आजकल मैं रेलवे स्टेशन पर रहता हूं। अपना पालन-पोषण करने के लिए कबाड़ा बीनने का काम कर रहा हूं। रंजीत ने बताया कि मैं अपने भाईयों से बहुत प्यार करता हूं। इसलिए कभी-कभी उनसे चोरी छुपे मिलने चला जाता हूं। लेकिन मेरे पापा अभी मुझे से गलत तरीके से पेश आते हैं। मैं चाहता हूं कि मेरे पापा मुझसे सही तरीके से बात करें; जैसे छोटे भाईयों से करते हैं, तभी मैं उनके साथ रह सकता हूं।

हर पल नशे से तड़प रहे हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर प्रियंका व रिपोर्टर पूनम

आगरा के कुछ क्षेत्र में इस पत्रकार ने विजिट किया। बातचीत में पत्रकार को पता चला कि यहां कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां बच्चे व इनके माता-पिता बैल छाप मंजन से दांत साफ करते हैं। इनके माता-पिता काफी समय से इसी मंजन का इस्तेमाल करते आ रहे हैं। इनके माता पिता के दांत काले रहते हैं। जब बच्चे किसी भी प्रकार का सख्त पदार्थ खाते हैं तो बच्चों के दांतो में दर्द होता है। इनके माता-पिता डॉक्टर को दिखाने की बजाए अपने बच्चों को सलाह देते हैं कि इस मंजन का प्रयोग करो। इन बच्चों के माता पिता को लगता है कि इस मंजन को करने से हमारे दांत का दर्द ठीक हो जाएगा। ऐसा बिल्कुल नहीं होता है। जिन बच्चों को यह मंजन दांत साफ करने को दिया जाता है वे बच्चे इस मंजन के आदी होते जा रहे हैं। क्योंकि यह मंजन कोई मामूली मंजन नहीं है। यह एक नशीले पदार्थ की चीज है, जिसके बच्चे आदी होते जा रहे हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मोनिका ने बताया कि यह मंजन करने पर हम बच्चों को चक्कर आने लगता है और कभी-कभी उल्टियां भी आ जाती हैं। हमारे माता-पिता इस गलतफहमी में जी रहे हैं कि इस मंजन से हमारे दांतों का दर्द ठीक हो जाता है, व हमारे दांत मजबूत हो जाएंगे। भूतकाल में इस जगह पर रहने वाले बच्चे इस मंजन के शिकार नहीं हुए थे। वर्तमान में इस मंजन की वजह से बच्चों की स्थिति बहुत खराब हो गई है। करीब दो सौ से भी अछिक बच्चे व इनके माता-पिता इस मंजन को अपना रहे हैं। जब बच्चे अपने कामों में लिप्त रहते हैं तो अपने मुंह में हर वक्त यह मंजन रखे रहते हैं। पहले बच्चे सिर्फ दांत साफ करने के लिए इस्तेमाल करते थे लेकिन अब बच्चे इस मंजन को नशे के रूप में प्रयोग करने लगे हैं। इस वजह से बच्चों के भी दांत काले होने लगे हैं, और साथ ही इनके मुंह में छाले भी पड़ने लगे हैं। मंजन की वजह से बच्चों की हालत ऐसी हो गई है कि अब इस मंजन के बिना बच्चे जी ही नहीं पा रहे हैं। खाना मिले ना मिले इनको, यह मंजन जरूर मिलना चाहिए।

बच्चों की तस्करी पर नहीं है लगाम

पृष्ठ 1 का शेष

मालिक व पब्लिक का दुर्व्यवहार

13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कन्हैया ने बताया कि जब हम बच्चे भीख मांगने के लिए नहीं जाते हैं तो हमारे मालिक मारते हैं और रात को खाना भी नहीं खाने देते हैं। भूख के मारे जब हम बच्चे बीमार हो जाते हैं, तो हमारी इलाज भी नहीं करवाते हैं।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजा ने बताया कि जब हम बस में पब्लिक की जेब काटते हैं तो हमे बहुत परेशानी आती है। शुरू-शुरू में मेरा मालिक जब मुझे इस काम में लगाया था तो मेरा हाथ डर से कांपने लगता था और किसी भी पब्लिक की जेब भी नहीं काट पा रहा था, मै इस काम में कई बार पब्लिक से पिट चुका हूं फिर मुझे इसी प्रकार काम के लिए भेजा जाता है। मैं जब अपने मालिक से बोलता हूं कि मुझसे यह काम नहीं होगा तो वह बहुत क्रोधित होते हैं और मारने-पीटने लगते

हैं। इसलिए डर से मैं यह काम बहुत अच्छी तरह से सीख लिया हूं। वर्तमान में जो भी बस अधिक भाड़ी-भाड़ वाली होती है, उस बस में जाकर पब्लिक की जेब काटता हूं। जब भी कोई व्यक्ति यह काम करते हुए देख लेते हैं, तो मुझे बहुत पीटते हैं। लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नही पड़ता, क्योंकि मैं अपने मालिक के पास पैसे लेकर नहीं पहुंचा तो वह मुझ पर पब्लिक से भी ज्यादा अत्याचार करेंगे।

15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि हम बच्चे जो भी पैसे कमा कर लाते हैं, वे सारे पैसे हमारे मालिक ही रख लेते हैं। हम बच्चों को किसी भी चीज की आवश्यकता होती है तो वे नहीं देते। हमें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अलग से समय निकालना पड़ता है। अर्थात अलग से जेब तराशी करनी पड़ती है, और उस जेब तराशी से आये पैसों को हम बड़ी सावधानी से छुपा कर रखते हैं।

संघर्ष करने वाले बच्चों के सुझाव

बच्चों ने बताया कि जिस प्रकार से हमारा मालिक हमारे माता-पिता को लालच देकर हम बच्चों से गलत काम करा रहे हैं, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। इससे हम बच्चों की जिंदगी बर्बाद हो रही है। हमारी खेलने-कूदने की उम्र में ही हमें गलत संगतों में फंसा दिया है।

16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजू ने बताया कि हम बच्चों को सही राह दिखाने की बजाय खतरनाक काम सिखा रहे हैं। हमें डर है कि कहीं यह लोग हम जैसे दूसरे मासूम बच्चों से इस तरह के गलत काम न करवायें, ताकि हमारी तरह अन्य मासूमों की जिंदगी बर्बाद न हो।

17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) पवन का कहना है कि हम बच्चे चाहते हैं कि हमें भी इस दलदल से बाहर निकाला जाए और इस तरह के व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये, जो हम बच्चों के जीवन से खिलावाड़ करते हैं तथा अत्याचार करते हैं।

क्या आप करेंगे हमारे अधूरे सपने पूरे?

बातूनी रिपोर्टर गुड्डी व दीपक

सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी अपनी नन्हीं सी आंखों में ख्वाब सजाए बैठे हैं। यह बच्चे भी दूसरे कलाकारों की तरह अच्छी स्टेज पर जाकर अपनी कला को लोगों के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं। इन बच्चों का ख्वाब तो एक सपना बनकर ही रह गया है। जब यह बच्चे कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो आपस में ही नांच-गा लेते हैं। इन बच्चों की कलाओं को कोई देखना नहीं चाहता। अगर किसी पब्लिक के सामने यह अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं तो पब्लिक बोलती है कि यह तो इनका रोज का कमाई का जरिया है; और इन मासूमों को लोग देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। यह पत्रकार कुछ ऐसे बच्चों से मिला जिनको डांस सीखने का बेहद शौक है। इन बच्चों को अभी तक कोई ऐसा साथी नहीं मिला, जो इन बच्चों को आगे ले जा सके। यह बच्चे डांस सीखने में बहुत माहिर हैं। अगर इन बच्चों को एक मौका मिल जाए तो यह बच्चे भी भविष्य में आगे बढ़ सकते हैं। जो लोग इन बच्चों से घृणा करते हैं, क्या वही लोग इन बच्चों को आगे बढ़ते हुए देखना चाहेंगे? आजतक हमसे किन्हीं लोगो ने सही तरिके से बातचीत नहीं की है, तो हमें डांस टीचर कहां से मिलेगा? अगर कोई भईया-दीदी अपना कीमती समय निकाल कर हमारे लिए डांस टीचर बनकर आएं, तभी हम डांस सीख पाएंगे। हम लोगों को दिखा सकते हैं कि हम बच्चे भी दूसरे बच्चों से कम नहीं है। सिर्फ हमें एक मौके की तलाश है जिससे हम आगे बढ़ सकते हैं, और लोगों की नजरों में अपनी इज्जत बना सकते हैं। हमें आगे बढ़ने के लिए आपके सहयोग की जरूरत है।

अंधविश्वासों की जिंदगी जी रहे हैं मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर बाबू व रिपोर्टर शम्भू

बदरपुर बोर्डर के निकट बस्ती में लगभग 250 झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों के सभी बच्चे व माता-पिता कामकाजी हैं। इनके माता-पिता और बच्चे खुद कबाड़ा बीनने के लिए दूर-दूर जगहों पर जाते हैं, तब जाकर कुछ कूडा-कबाड़ा मिलता है। यही इनकी जिंदगी है। यह बच्चे और इनके माता-पिता अंधविश्वासों की जिंदगी जी रहे हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि जिस स्थान पर इन बच्चे के माता-पिता झुग्गी-झोपड़ी बना रखे हैं उसके निकट एक बहुत बड़ा खंडहर है। लोग इसको जंगल के नाम से जानते हैं। लोगो का कहना है कि आज से हजारो साल पहले इस जगह पर राजा-महाराजा रहा करते थे। जब से राजा राज गया तभी से लोग इसमें झुग्गी-झोपड़ी बनाकर अपना गुजर-बसर कर रहे हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि इस खंडहर में मरे हुए बच्चों, लोगों और जानवरों को दफनाया जाता है, जिसकी वजह से काफी बच्चे व माता पिता डरी हुई जिंदगी जी रहे हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कन्हैया ने बताया कि भईया जब हम बच्चे रात को सोते हैं, तो खंडहर में से अजीब सी आवाज़ आती है और उसी खंडहर में से बच्चों के रोने की आवाज़ें भी सुनाई देती हैं। पत्रकार ने खुद उस खंडहर जाकर देखा। वह खंडर काफी डरावना लग रहा था। बच्चों के माता-पिता का कहना है कि पहले ऐसा नहीं होता था; इस खंडहर में जब से मरे हुए बच्चों व जानवरों को दफनाया जाने लगा है तब से यह परेशानियां बढ़ती ही जा रही हैं। इसी वजह से बच्चों के माता-पिता शाम के सात बजते ही अपने घर के अंदर चले जाते हैं और सुबह होने के बाद ही अपने घर से बाहर निकलते हैं।

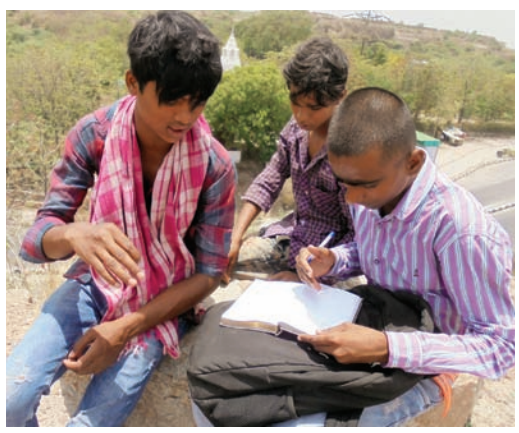

पत्रकार के सहयोग से आठ वर्षीय बच्चा सुरक्षित पंहुचा अपने घर

रिपोर्टर ज्योति

विजिट के दौरान पत्रकार को एक 8 वर्षीय बच्चा दिखा, जो तुगलकाबाद की रेल की पटरियों पर रोते हुए भाग रहा था। पत्रकार यह देखकर उस बच्चे के पास दौड़कर गया; क्योंकि सामने से तेज रफतार से रेलगाड़ी आ रही थी। पत्रकार ने उस बच्चे का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा। वह बच्चा बहुत रो रहा था। पत्रकार ने उस रोते हुए बच्चे को चुप कराया और पानी भी पिलाया। वह इतना डरा हुआ था कि अपना नाम भी नहीं बता पा रहा था। पत्रकार ने उस बच्चे को समझाया कि आप डरो मत, मैं आप जैसे बच्चों के लिए काम करती हूं। यह जानकर बच्चा पत्रकार की बातों पर विश्वास करने लगा, फिर बच्चे ने अपने बारे में बताया कि मैं अपने दोस्तों के साथ पीने का शर्बत लेने के लिए जा रहा था, मेरे दोस्त मुझे छोड़कर भाग गए जिसकी वजह से मैं अपने घर जाने का रास्ता भूल गया हूं। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप को कुछ तो याद होगा जिस रास्ते से आप आए थे। काफी देर से बात करने के बाद भी वह बच्चा अपने घर जाने का रास्ता नहीं बता पा रहा था। पत्रकार ने तुगलकाबाद के आस-पास झुग्गी-झोपड़ियों में इस बच्चे के साथ जाकर पूछताछ किया कि आप इस बच्चे को जानते

हो? लेकिन किसी व्यक्ति ने यह नहीं बोला कि मैं इस बच्चे को जानता हूं। पत्रकार इस बच्चे को लेकर इधर-उधर भटक रहा था, तभी अचानक पत्रकार उस जगह के पास पहुंच गया, जहां इस बच्चे का स्कूल था। उस बच्चे ने अपना स्कूल देखते ही पहचान लिया और बोला कि मैं यहां पढ़ने के लिए आता हूं। यहां से मुझे अपने घर का रास्ता मालूम है। वह बच्चा पत्रकार का हाथ छोड़कर आगे-आगे भागने लगा। जब पत्रकार इस बच्चे के घर पहुंचा तो इसके सारे दोस्त अपने घर पर शर्बत पी रहे थे और इसे देखकर हंसने लगे। लेकिन इस बच्चे के माता-पिता को कोई परवाह नहीं थी कि हमारा बच्चा इस वक्त कहां है। वह अपने घर के अंदर मजे से सो रहे थे। पत्रकार ने इस बच्चे के माता-पिता को समझाया कि आप अपने बच्चे को अकेले कहीं बाहर मत भेजा करो। अगर आज हमलोग सही वक्त पर आपके बच्चे के पास नहीं पहुंचते तो आपके बच्चे की रेलगाड़ी से दुघर्टना हो सकती थी। यह बात सुनते ही माता-पिता चैंक गए और पत्रकार से वादा किया कि अब से हम अपने बच्चे को अकेले कहीं नहीं भेजेंगे। बच्चों को समझाते हुए कहा कि अगर आपको कोई दोस्त जबरदस्ती बाहर ले जाता है तो अपने मम्मी-पापा को बोलना कि यह मुझे जबरदस्ती बाहर ले जा रहा है। लेकिन आप बच्चे किसी के साथ अकेले बाहर नहीं जाओगे।

आखिर सरकारी अधिकारी कब निभाएंगे अपनी जिम्मेदारी?

बालकनामा ब्यूरो

अक्सर सरकारी स्कूल के बच्चों से जानकारी मिल रही है कि स्कूल के अध्यापकों का व्यवहार कुछ ठीक नहीं है। यह अपनी मनमानी करते रहते हैं। अध्यापक स्कूल तो सही समय पर पहुंच जाते हैं, पर स्कूल आते ही एक दूसरे अध्यापक से गप्पें मारते रहते हैं। बच्चों की पढ़ाई पर तो बिल्कुल ध्यान ही नहीं देते। जब कोई सरकारी अधिकारी स्कूल के बच्चों से मिलने आते हैं, तो अध्यापक बच्चों को ही दोषी ठहराते हैं कि यह बच्चे सही से पढ़ाई नही करते हैं। इन बच्चों का सिर्फ खेलने में ध्यान लगा रहता है। बच्चों ने कहा यह तो

एक परेशानी है, दूसरी परेशानी यह है कि हमारे स्कूल में खाना भी सही तरिके का नहीं आता है। खाने में कभी पानी-पानी सा होता है, कभी तो छोटे छोटे कीड़े भी निकल आते हैं। इसलिए जो पैसे हम घर से लेकर जाते हैं उन पैसों से बाहर का खाना खरीदने जाते हैं, अगर अध्यापक देख लेते हैं तो हमारे पैसे भी छीन लेते हैं, फिर हम बच्चों को पूरा दिन भूखा रहना पड़ता है। जब हमारे माता-पिता हम बच्चों से स्कूल में मिलने आते हैं और हमारे बारे में हमारे अध्यापकों से जानकारी लेते हैं कि हमारा बच्चा पढ़ाई कैसी कर रहा है तो अध्यापक हमारे माता-पिता को यही बोलते हैं कि आपका बच्चा पढ़ाई-लिखाई बिल्कुल नहीं करता है, सारे दिन बातें करता रहता है। हम बच्चे ऐसा बिल्कुल नहीं करते हैं। हमारे अध्यापक हम बच्चों को खुद नहीं पढ़ाते हैं। हमारे माता पिता तथा सरकारी अधिकारियों से झूठ बोलते हैं। सरकारी अधिकारी अध्यापकों का कहना सच मान लेते हैं। इसका खामियाजा हम बच्चों को भुगतना पड़ रहा है। हम बच्चे दिन पर दिन पढ़ाई में कमजोर होते जा रहे हैं। हमारा कहना है कि इसके लिए सरकार को जल्द से जल्द स्कूलों में जाकर छानबीन करनी चाहिए। सत्यता जान कर अध्यापकों पर उचित कार्यवाही की जानी चाहिए, ताकि सरकारी स्कूलों के अध्यापक हम बच्चों को अच्छे से पढ़ायें और हम बच्चे सरकारी स्कूलों में भी अच्छे से पढ़ाई कर सकें।

कौन सुनेगा प्रदीप की पुकार?

बातूनी रिपोर्टर शबाना व ज्योति

यह दर्दनाक खबर 16 वर्षीय प्रदीप की है। प्रदीप आजकल अलग-अलग रेलवे स्टेशन पर भीख मांगने जाता है। जैसे नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली तथा आनन्द विहार। दुख की बात यह है कि प्रदीप बचपन से ही विकलांग है। घर में कोई भी सदस्य कमाने वाला न होने के कारण प्रदीप ही भीख मांगकर अपने घर का गुजारा करता है। प्रदीप के परिवार में दो छोटे भाई हैं। वह सरकारी स्कूल में पढ़ाई करते हैं। प्रदीप जब दो साल का था तब उसके पिता का देहांत हो गया था फिर प्रदीप की मम्मी परिवार का खर्चा चलाने व अपने बच्चों का पालन पोषण करने के लिए कबाड़ा बीनने लगी थीं लेकिन जब प्रदीप 15 साल का था तो उसकी मां को टी. बी. जैसी बीमारियों ने जकड़ लिया, जिसकी वजह से प्रदीप कि मम्मी बीमार रहने लगी, जिसकी बदौलत

प्रदीप को भीख मांगने के लिए मजबूर होना पड़ा। प्रदीप एक साल से भीख मांग रहा है; क्योंकि प्रदीप अपने दोनों पैरों से लाचार है। पहले प्रदीप ने दो महीनो के लिए भीख मांगना बंद कर दिया था; क्योंकि प्रदीप की मम्मी यह नहीं चाहती थीं कि मेरा बेटा मुझसे दूर रहे। इसलिए प्रदीप राशन की दुकान पर काम मांगने के लिए गया। उस दुकान के मालिक ने जलील करके भगा दिया था कि तुम जैसे विकलांग मेरी दुकान पर कैसे काम कर सकते हो? जब राशन की दुकान के मालिक ने मुझे जलील करके भगाया उसके अगले दिन से ही मैंने फिर भीख मांगना शूरू कर दिया। अब स्टेशनों पर मैं भीख मांगते हुए नजर आता हूं। रेलगाड़ी में भी अपने वस्त्रों को उतार कर भीख मांगता हूं फिर भी वह इतना पैसा इकट्ठा नहीं कर पा रहा है कि वह अपनी मां का इलाज करा सके। इसलिए वह दो-तीन दिन स्टेशन पर रहकर पैसे को जमा करता है और जैसे ही सौ से दो सौ रुपए इकट्ठे होते हैं वैसे ही वह अपने घर चला जाता है। उन्हीं पैसो से राशन व भाईयों की पढ़ाई का खर्चा उठा रहा है। प्रदीप चाहता है कि कैसे भी मेरी मम्मी का इलाज हो जाए और जो सरकार द्वारा विक्लांगो के लिए पेंशन दी जाती है वह पेंशन मुझे भी मिलनी चाहिए। मैं इस पेंशन के सहयोग से अपने घर का खर्चा और मम्मी का इलाज करा सकूंगा।

माता-पिता से झूठ बोलकर बच्चे अपनी जरूरतों को पूरा करते हैं

बातूनी रिपोर्टर वर्षा रिपोर्टर चेतन

बच्चे अपनी जरूरतो को पूरा करने के लिए अपने माता पिता से झूठ बोलकर कोचिंग सेंटर का नाम लेकर कबाड़ा बीनने के लिए जाते है इस बात कि भनक बालकनामा पत्रकार को पड़ी तभी पत्रकार ने बच्चों से बातचीत करी और पता चला कि इन बच्चों को आयदिन कि सी ना किसी चीज कि जरूरत पड़ती है जैसे अच्छी अच्छी चीजे खाने का मन करता है इसलिए इन बच्चों को जंगलो रोडो और गलियों में कबाड़ा बीनना पड़ता है और यह बच्चे अपने स्कूल के बैंग में घर से ही बोरी चुपाकर ले जाते है । आधे रास्ते में जाने के बाद बैंग में से बोरी निकालकर अपना स्कूल बैंग जंगल में छूपा देते है । इन बच्चों को कबाड़ा बीनते हुए देखकर पत्रकार इन बच्चों के पास पहुंचा और बच्चों से पूछा कि आप कोचिंग सेंटर का नाम लेकर बाहर कबाड़ा बीनने क्यों जाते हो? तभी 11 वर्षीय परिवर्तित नाम गोलू ने बताया कि भईया हम बच्चे को नए वस्त्र तंथा चीज खाने के लिए घर वाले पैसे नही

देते है इसलिए हम बच्चे 50.60 रुपए का कबाड़ा बेचकर अपनी जरूरतो को पूरा करते है क्योंकि घर वाले जो भी पैसे देते है वह स्कूल कि कॉपी किताब लाने में ही खर्च हो जाते है तो चीज व नए वस्त्र कहा से लाएगे । माता पिता से बात करने पर पता चला कि इनको बेतनरोजगार बहुत कम होने कि वजह से अपने बच्चों कि जरूरतो को पूरा नही कर पा रहे है इसी कारण इन बच्चों को शिक्षा से बंछित होना पड़ रहा है ।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

बढ़ते कदम का 15 वां स्थापना दिवस 9 जुलाई को दिल्ली और लखनऊ में मनाते हुए बढ़ते कदम , चेतना और बालकनामा के सदस्य और कार्यकर्ता

स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए बढ़ते कदम और बालकनामा के सदस्य और अन्य स्ट्रीट चिल्ड्रन

चेतना के महत्वपूर्ण कार्यक्रम स्ट्रीट टू चिल्ड्रन की कवरेज टाइम्स ऑफ इंडिया में विस्तार से दी गयी।

चेतना द्वारा आयोजित कार्यक्रम की झलक जिसमें उत्तर प्रदेश की महिला एवं बाल कल्याण मंत्री श्रीमती स्वाति सिंह मौजूद रहीं।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471